

मैं तो चल्याँ टीको लगवावाँ, तूँ भी चाल

मोहम्मद उमर



हमारी गाड़ी मुख्य सड़क को छोड़कर, भीतर जंगल की ओर जा रही एक दूसरी सड़क पर मुड़ गई। कुछ दूर चलने पर हम एक चढ़ाई चढ़ने लगे। यहाँ से गाँव के अन्तिम छोर पर बसे घर दिख रहे थे। एक पहाड़ी से मुड़कर, अब हमारी गाड़ी ढलवाँ सड़क पर तेज़ी-से लुढ़कती जा रही थी। अगल-बगल सिर्फ और सिर्फ हरे-भरे जंगल नज़र आ रहे थे। इस ढलान के बाद एक और खड़ी चढ़ाई थी, इतनी ज़्यादा कि अब हम दूर के पहाड़ों की चोटियों को साफ-साफ देख सकते थे। आज हम राजसमन्द ज़िले के

केलवाड़ा ब्लॉक में स्थित कांकरवा पंचायत में आने वाले एक गाँव में जा रहे थे।

कुम्भलगढ़ का किला जो अपने असीम विस्तार के साथ मीलों लम्बी दीवार के लिए जाना जाता है, इसी क्षेत्र में स्थित है। यह किला अपने आप में राजपूताने की समृद्धि और आन-बान के लिए प्रसिद्ध है। इतिहास की इस गौरवशाली धरोहर से महज़ कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस गाँव में आकर हम वंचना को उसके विभिन्न अर्थों में, खुद की आँखों से देख पा रहे थे। सिर्फ घर ही

नहीं, बल्कि लोगों की काया भी काफी कुछ टूटी-बिखरी-सी थी यहाँ।

शिक्षा की स्थिति

हमारे साथ गाड़ी में पंचायत के उपस्वास्थ्य केन्द्र पर कार्यरत एएनएम पुष्पाजी, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता नवली देवी, आशा कार्यकर्ता अण्छी बाई और मेरी सहकर्मी मोनिका भी बैठी थीं। नवली देवी ने बताया कि यहाँ पर मुख्यतः भील आदिवासी बसे हुए हैं। तकरीबन 25-30 परिवार नीचे बसे हैं, और इतने ही घर बाएँ हाथ पर स्थित पहाड़ के ऊपर बसे हैं। सरकारी स्कूल इस ढाणी की शुरुआत में ही पीछे रह गया था। कोरोना से फैल रही बीमारी का आतंक इतना ज्यादा है कि तकरीबन दो साल होने को हैं, और स्कूल नहीं खुल रहे हैं। हालाँकि, सभी शिक्षकों को रोज़ स्कूल आना होता है। सरकार मोबाइल फोन पर स्माइल कार्यक्रम - घर पर सीखो - चला रही है, लेकिन इस बियाबान में कहाँ मोबाइल और कहाँ इंटरनेट। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई तो अब भगवान भरोसे ही है।

बच्चे जामुन के पेड़ों या फिर अपनी भेड़-बकरियों के साथ ही समय गुज़ार रहे हैं। कुछ इने-गिने शिक्षक ही ऐसे हैं, जो गाँव और ढाणी में घूमकर बच्चों को कुछ पढ़ने-लिखने का काम देकर आ जाते हैं। बच्चे अपना काम पूरा कर, स्कूल जाकर जाँच करा लेते हैं, और नया काम लेकर आ जाते हैं।

अण्छी बाई के शब्दों में कहें तो, “दो-दो वर वेई गया, कोरोना ऊँ इसकुल्लाँ बन्द हैं, छोरा-टाबरा री भणाई रो तो हेपुसों सतियानाश वेई गियों है, अबे तो जो आवतों वोई भूल्या परा।”

इस भील ढाणी में ज़्यादातर बच्चे पहली या दूसरी पीढ़ी के हैं, जो स्कूल का मुँह देख रहे हैं। किसी भी समाज में शिक्षा का अभाव, तमाम अन्धविश्वासों और भ्रान्तियों को फैलने में और तेज़ हवा देता है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता नवली देवी ने कहा, “अणि पाड़ा रा मनखाँ मे हाल घणों भेम है, ज्यू कोरोना ऊँ वंचवा रे वातरे टीकों नी लगाई रिया हैं। डोकरा-बूढ़ा री की वात करां, अटे तो जवान आदमी भी टीका नी लगाई रिया हैं।”

मुहिम की शुरुआत

हमारी गाड़ी सड़क के एक किनारे रुकी। हम सभी गाड़ी से उतरकर, अपने हाथों में मेवाड़ी भाषा में लिखी नारे वाली तख्तियाँ सहेजने लगे - ‘मूँ तो चल्याँ टीको लगवावाँ, तू भी चाल’। यह नारा मेरे साथी विष्णु भाई ने बनाया था। मुझे यह नारा बाकी के सभी नारों से ज़्यादा पसन्द है। मैंने अखबार से बनी टोपियों में से, यह नारा लिखी टोपी उठाकर अपने सिर पर रख ली। बाकी लोग भी अपने-अपने सिर पर टोपियाँ लगाने लगे। नारा लिखते समय ही दफ्तर में

साथियों के बीच यह बात आई थी कि गाँव में जो लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं, वे भला इन नारों को कैसे पढ़ सकेंगे। इस बात का खयाल रखते हुए, तख्तियों पर साफ नज़र आने वाले चित्र भी बना लिए गए थे जिसमें कोरोना से बचाव और टीका लगवाने के बारे में जानकारी देखी जा सकती थी।

अपने हाथों में पोस्टर, बैनर और तख्तियाँ लेकर हम लोग जैसे ही गाँव में दाखिल हुए, तो लोग अपने-अपने घरों के दरवाज़े बन्द करने लगे। एक घर के बाहर बैठी कुछ औरतें हरी धनिया की गड़िडियाँ बना रही थीं। हम लोगों को देखते ही वे अपनी धनिया, टोकरी और बर्तन-भांडे छोड़कर, ऊपर पहाड़ों पर स्थित जंगल में भाग गईं। हम उन्हें रोकते ही रह गए लेकिन वे जंगल में ओझल हो गईं।

गाँवासियों से बातचीत की कोशिश

एक और घर से भड़ाक-से दरवाज़ा बन्द कर सांकल चढ़ाने की तेज़ आवाज़ आई। मोनिका और नवली देवी ने अनेक बार दरवाज़ा खटखटाया, लेकिन कोई भी निकलकर बाहर नहीं आया। इस घर की एक बूढ़ी महिला, उसकी बहू और तीन बच्चे, छत की मुण्डेर से झाँककर हम सभी को देख रहे थे।

नवली देवी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता होने के नाते इस ढाणी में अक्सर आती हैं और यहाँ पर बहुत-से लोगों को जानती भी हैं। लेकिन, आज तो उनके बुलाने पर भी लोग पास नहीं आ रहे थे। उन्होंने कुछ महिलाओं से बात की, फिर हमें बताया कि ये लोग डर रहे हैं। उन्हें लग रहा है कि हम सभी लोग इन्हें टीका लगा देंगे, इसीलिए लोग सामने नहीं आ रहे हैं। एक महिला ने अपने घर का दरवाज़ा



बन्द कर लिया और पीछे के आँगन में बँधी गाय को चारा देने लगी। मेरी सहकर्मी मोनिका और नवली देवी ने आँगन की चारदीवारी के बाहर से उन्हें खूब समझाया कि हम लोग टीका लगाने वाले नहीं हैं। हम तो सिर्फ बात करने आए हैं। फिर भी वे नहीं मान रही थीं।

गाँव में कोई भी हम लोगों के पास आने या हमसे बात करने को तैयार नहीं था। इसी दौरान गली में एक लड़का दिखाई दिया। उसने सरकारी स्कूल की ड्रेस पहन रखी थी। वह भी तेज़ कदमों से चलता हुआ, गली पार कर, खेतों की तरफ निकल भागने की फिराक में था। मैंने उसे रोका तो वह रुक गया। तभी खिड़की से झाँकती उसकी माँ ने तेज़ आवाज़ में कहा, “छोरा, नाई जा रे, कोई टीकों लगावा आई रिया हैं।” मैंने उसकी माँ को समझाते हुए कहा, “घबराओ मत, हम लोग टीका लगाने नहीं आए हैं। देखो, हमारे हाथ में कुछ भी नहीं है। हम तो बस आपसे बात करना चाहते हैं।” लेकिन, वे हम पर यकीन नहीं कर रही थीं। उस लड़के ने बताया कि उसका नाम चम्पालाल है। वह ढाणी की शुरुआत में ही स्थित उच्च प्राथमिक स्कूल में कक्षा आठ का विद्यार्थी है।

“स्कूल क्यों नहीं जा रहे हो?” मैंने पूछा।

“कोरोना री वजह ऊँ स्कूल बन्द है,” चम्पालाल ने कहा।

“अच्छा, क्या है यह कोरोना?”

“सरजी, या एक बेमारी फैली है, घणा मनक मरी रिया है।”

“हाँ, तो यह बात तुमने अपनी माँ और गाँववालों को बताई है? क्या तुमने उन्हें बताया है कि कोरोना से कैसे बचा जा सकता है?”

चम्पालाल ने झंपते हुए अपनी गर्दन झुका ली।

उसकी माँ अभी भी खिड़की से झाँकते हुए हम सभी को सशंकित नज़रों से देख रही थीं। इतने में सरकारी स्कूल के दो शिक्षक भी यहाँ आ पहुँचे। इनमें से एक शिक्षक दिनेशजी पुराने परिचित निकले। वे हमारी कार्यशालाओं में शामिल होते रहे हैं। हम लोगों को देखते ही खुश हो गए। दूसरे शिक्षक का नाम सोहनलाल था। दिनेशजी ने बताया, “कुछ देर पहले पीईईओ साब (पंचायत के सीनियर सेकंडरी स्कूल के प्रधानाचार्यजी) का फोन आया था। कह रहे थे कि गाँव में टीम आई है, आप लोगों को भी उनके साथ रहना है और गाँव के लोगों को समझाने में मदद करना है। इसीलिए हम भी आ गए।”

चम्पालाल ने अपने शिक्षकों को देखते ही नमस्ते किया।

“चम्पालाल कितर हैं, भणाई-लिखाई वेई री हैं या नी?” दिनेश सर ने पूछा।

चम्पालाल ने पहले की तरह ही

शर्माकर गर्दन झुका दी। उसकी माँ अभी तक खिड़की के भीतर से कुछ बोल रही थीं। शायद हम कुछ अजनबी लोगों के बीच अपने बेटे को देखकर कुछ असहज थीं, लेकिन अपने गाँव के शिक्षकों के ऊपर उन्हें पूरा भरोसा था। इसीलिए उनके आते ही शान्त हो गईं। ये दोनों शिक्षक पिछले दस-बारह सालों से इसी गाँव के स्कूल में बच्चों को पढ़ा रहे हैं।

टीकाकरण जागरूकता अभियान

आज सुबह इस गाँव में आने से पहले, हम लोगों ने पंचायत केन्द्र में स्थित सीनियर सेकंडरी स्कूल जो यहाँ से तकरीबन दस-बारह किलोमीटर दूर है, में एक मीटिंग की थी। इस मीटिंग में स्कूल के प्रधानाध्यापक, जिन्हें अब पंचायत आरम्भिक शिक्षा अधिकारी कहा जाता है, शिक्षक-शिक्षिकाएँ, सरपंच, वॉर्ड पंच, एएनएम, आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता मौजूद थीं। इनके अलावा कुछ आम नागरिक भी मौजूद थे।

आज की इस कोर ग्रुप मीटिंग में पंचायत के दायरे में आने वाले उन गाँव और ढाणियों का चुनाव कर लिया गया था, जहाँ लोग टीका नहीं लगवा रहे हैं। इस मीटिंग के तुरन्त बाद ही पीईईओ सर ने इस पंचायत में आने वाले सभी प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्कूलों के प्रधानाचार्यों और शिक्षकों को यह सन्देश भेज

दिया था कि सभी को अपने आसपास के इलाके में आयोजित हो रहे कोविड टीकाकरण जागरूकता अभियान में शामिल होना है। दिनेश सर और सोहनलाल सर के आ जाने से हम लोगों को बहुत मदद मिली।

खैर, चम्पालाल के साथ हमारी बात आगे बढ़ी। मैंने पूछा, “तुम स्कूल में विज्ञान पढ़ते हो?”

“हाँ।”

“तुम्हें पता है, यह कोरोना क्या है? कैसे बीमार करता है हम सबको?”

“सर यो एक वाइरस है, जो ओंपरे नाक ऊँ न मुँडा ऊँ माइने परो जावे। अणी वातरे मास्क लगाणों और हाथ धोवतों रेवनों सावे,” चम्पालाल ने कहा।

चम्पालाल के पास मास्क नहीं था। मोनिका ने उसे एक मास्क दे दिया। मैंने उसे साथ चलकर, गाँव के लोगों को भी यही सब बातें समझाने के लिए कहा। चम्पालाल तैयार हो गया। मेरे साथी ने उसे भी एक तख्ती दे दी। अब चम्पालाल रास्ता दिखाते हुए हम सबके आगे-आगे चल रहा था। उसकी माँ अब भी खिड़की पर थीं। वे अपने बेटे को हमारे कारवाँ के साथ जाता हुआ देख रही थीं। हमारी टोली ने इस ढाणी का एक पूरा फेरा लगाया। जो भी लोग नज़र आए, उन्हें हम लोगों ने कोरोना से बचाव के तरीके और टीका लगवाने के फायदे के बारे में बताया। अब तक लोग यह

समझने लगे थे कि हमारे पास टीका नहीं है, अतः कुछ लोग घरों से निकलकर हमसे बात करने के लिए राजी हो गए थे। इस ढाणी का फेरा पूरा कर हम लोग नीम के पेड़ के नीचे वापस आ गए। अब तक चम्पालाल की माँ भी घर के बाहर आ गई थीं। अपने बेटे को हमारे बीच घुला-मिला देखकर अब वे कुछ सहज हो गई थीं।

हमने चम्पालाल से कहा कि तुम अपनी माँ को भी बताओ कि टीका लगवाना क्यों ज़रूरी है। चम्पालाल ने यही बातें अपनी भाषा में, अपनी माँ से कहीं। उसकी माँ ने भी कुछ जवाब दिया, लेकिन इस बार उनके स्वर में तल्खी नहीं थी, बल्कि वे मुस्करा रही थीं। अपने बेटे की शिक्षा और उसकी, बाहर से आए हुए लोगों की टोली का सदस्य बन सकने की काबिलियत देखकर शायद वे कुछ गौरवान्वित महसूस कर रही थीं।

आशा कार्यकर्ता अण्ठी बाई ने

चम्पालाल की माँ के पास जाकर कहा, “थाँरो छोरों तो माणे हाथे घूमि-घूमि ने लोगाँ ने समझावा को बढ़िया काम कर रियो है, अबे थाँ भी टीकों परो लगावो।”

“वा ठीक, मूँ लगवा लेवाँ, पण अटे ही ज लगवाओ तो परो लगाऊँ, अस्पताल हूदी तो मारा ऊँ नई आवाई,” चम्पालाल की माँ ने कहा।

अण्ठी बाई ने खुश होते हुए हमको बताया, “सरजी, ये टीका लगवाने को तैयार हैं, लेकिन उतनी दूर अस्पताल नहीं जाना चाहती हैं। कह रही हैं कि यहीं पर लगा दो।”

एएनएम पुष्पाजी भी खुश हो गई थीं। उन्होंने चम्पालाल की माँ से एक बार फिर पूछा, “अटे लावाँ तो लगवाई न?”

चम्पालाल की माँ ने सहमती में सर हिला दिया।

पुष्पाजी ने पास के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर फोन किया। वहाँ



नियुक्त एक सहकर्मी अपनी मोटरसाइकिल से टीके की पेटी लेकर आने को तैयार हो गया था। यहाँ से मुख्य सड़क तक जाकर उससे वह पेटी लेना थी। पुष्पाजी फौरन रवाना हो गईं। कुछ देर बाद जब वे वापस लौटीं तो उनके हाथ में कोविशील्ड वैक्सीन से भरी नीले रंग की एक पेटी थी।

इस दौरान, हम लोगों ने गाँव में घूमकर यह खबर दे दी थी कि कुछ ही देर में नीम के पेड़ के नीचे, चबूतरे पर कोविड के टीके लगाए जाएंगे। आज किसी को अस्पताल नहीं जाना पड़ेगा। तब तक चम्पालाल की माँ के अलावा एक और बुजुर्ग महिला टीका लगवाने को तैयार हो गई थीं। हमारे साथ चल रहे शिक्षक साथियों ने यहाँ की बोली में अपनी बात समझाते हुए यह कमाल कर दिखाया था। जब तक पुष्पाजी वापस लौटीं, तब तक कुल चार लोग टीका लगवाने के लिए तैयार हो गए थे।

टीकाकरण की शुरुआत

नीम के पेड़ के नीचे, चबूतरे पर ही हम लोगों ने अपना बैनर टांग दिया था। ज़मीन पर ही तख्तियाँ भी गाड़ दीं। अच्छा-खासा माहौल बन गया था। टीका लगवाकर लोग वहीं पेड़ के नीचे बैठकर आराम कर रहे थे। कुछ महिलाएँ अभी भी अपने-अपने घरों की खिड़कियों और दरवाज़ों से झाँक रही थीं। जिन चार लोगों को

टीका लगा था, लोग उन्हें गौर-से देख रहे थे।

मैं और मेरे साथी शिक्षक, चम्पालाल को साथ लेकर ऊपर पहाड़ पर बसी ढाणी की तरफ चल पड़े। आंगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ता भी हमारे साथ ही थीं।

अण्छी बाई ने बताया कि इस ढाणी में आज तक कोई सरकारी अधिकारी नहीं आया है। जंगलों और खेतों के बीच से होकर पैदल ही ऊपर की तरफ जाना होता है। अच्छी-खासी दूरी है और रास्ता भी ऊबड़-खाबड़ा लगातार पहाड़ पर ऊपर चढ़ते हुए दम फूलने लगा था। हमने ऊपर जाकर देखा तो वहाँ भी सब दरवाज़े बन्द मिले। सिर्फ कुछ घरों में बच्चे और महिलाएँ बैठे नज़र आए। पूछने पर उन्होंने बताया कि घर के बाकी लोग खेतों पर गए हैं। हम लोगों ने उनसे बात की और उन्हें कोरोना बीमारी, उससे बचाव के तरीके और टीकाकरण के बारे में बताया। उनसे नीचे ढाणी में आकर टीके लगवाने का आग्रह भी किया। तकरीबन घण्टे-डेढ़ घण्टे इन पहाड़ों में घूमकर जब हम वापस नीचे, उसी नीम के पेड़ के पास पहुँचे, तो देखा कि काफी भीड़ लगी है। पुष्पाजी ने बताया कि वे अब तक कुल 14 लोगों को टीका लगा चुकी हैं। कुछ और लोग भी तैयार हो गए हैं। वे अपना आधार कार्ड लाने घर गए हैं।

पुष्पाजी, नवली देवी और अण्ठी बाई, तीनों ही बहुत खुश थीं। इस भील बस्ती में, एक दिन में 14 टीके लग जाना, उनकी नज़र में बहुत बड़ी उपलब्धि थी। गाँव में जो माहौल बना, उसकी देखा देखी, अब और लोग भी तैयार होने लगे थे। ऊपर पहाड़ पर बसे कुछ परिवार भी टीका लगवाने का मन बना रहे थे। पुष्पाजी ने बताया कि गाँव में अक्सर ऐसा ही होता है। जिन्हें टीका लगता है, लोग दो-चार रोज़ उनपर नज़र रखते हैं। यदि वे ठीक-ठाक दिखाई देते हैं, तो लोग स्वयं भी टीका लगवाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

आज, सरकारी स्कूल के दोनों शिक्षकों, दिनेशजी और सोहनलालजी का अपने स्कूल के आसपास के समुदाय से जुड़े होना, बहुत काम आया। एक तरह से देखें तो उनके विद्यार्थी चम्पालाल का हमारे अभियान में शामिल हो जाना, आज के अभियान का एक क्रान्तिकारी मोड़ साबित हुआ है। चम्पालाल ने 14 से अधिक लोगों को टीका लगवाने के लिए तैयार करने में मदद की।

यह इस तरह की अकेली कहानी नहीं है। पिछले दो महीनों के दौरान मैं और मेरे साथी राजसमन्द ज़िले की तकरीबन 20 से अधिक पंचायतों के गाँव और ढाणियों में जाकर इसी तरह ही कोरोना से बचाव के लिए टीकाकरण जागरूकता अभियान कर रहे हैं। हमारी संस्था अजीम प्रेमजी

फाउंडेशन, इस इलाके में पिछले कई बरसों से शिक्षकों की क्षमता संवर्धन के लिए काम कर रही है। हम लोग गाँव-गाँव में स्थित सरकारी स्कूलों में जाकर शिक्षकों और बच्चों के साथ काम करते आ रहे हैं। शिक्षकों का प्रशिक्षण, मीटिंग, बाल मेले और रविवार के दिन होने वाली स्वैच्छिक शिक्षक मंच की बैठक, यह सब कुछ यहाँ पिछले आठ सालों से हो रहा है। बस, कोरोना की वजह से, ये बीते दो साल बहुत खराब गुज़रे हैं।

क्यों है टीके का भय?

अलग-अलग गाँव में कार्यरत अपने परिचित शिक्षकों से बातचीत के दौरान हमें मालूम चला कि कुछ इलाकों में टीकाकरण की रफ्तार बहुत धीमी है। शुरू-शुरू में तो सरकार की तरफ से ही टीके कम आ रहे थे। बाद में स्थिति में सुधार आया और ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों तक टीका पहुँचाने का प्रयास किया जाने लगा। इस पूरे ब्लॉक में एक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र और कुल चार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मौजूद हैं। अब हर तीसरे-चौथे दिन टीका आ रहा है। लोग शहर से भाग-भागकर आ रहे हैं और टीका लगवाकर जा रहे हैं, लेकिन कई ऐसे भी इलाके हैं, जहाँ लोग टीका नहीं लगवाना चाहते।

असल में, पहला टीका तो ज़्यादातर लोगों ने ना-नकुर करके भी लगवा लिया था, लेकिन कोरोना की

दूसरी लहर में हुई तमाम मौतों ने उनके मन में कुछ भ्रम डाल दिए हैं। कुछ लोगों को गलतफहमी हो गई कि ये मौतें टीका लगवाने की वजह से हुई हैं। इसी तरह कई युवाओं का मानना है कि इस टीके के लगने से उनकी मर्दानगी कम हो जाएगी। सरकार आबादी कम करना चाहती है, और इसी टीके के साथ इन्सान को नामर्द बनाने की दवाई भी दी जा रही है। आशा कार्यकर्ता ने बताया कि गाँवों में तो महिलाएँ यहाँ तक कह दे रही हैं कि “मुझे टीका लगाकर मार दोगी और मेरे मरद को तुम रख लोगी।”

आंगनवाड़ी और आशा सहायिकाओं का काम था, घर-घर जाकर लोगों को समझाना और उन्हें टीका लगवाने के लिए प्रेरित करना। इन्होंने काफी मेहनत से काम किया है। कई गाँवों में मेरा अनुभव रहा है कि सरकार के कर्मचारियों में आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ही ऐसी थीं, जो घरों के दरवाज़े पर पहुँचकर ही बता देती थीं कि इस घर में किस सदस्य को टीका लगा है, और किस को नहीं। नवली देवी ने बताया कि “लोग तो अतरा तक केड़ देवे हैं कि सरकार वाला असली टीकों तो थाणे लगावे, ने मोरे वातरे नकली टीकों आई रियो हैं, मोए गरीबों ए मारवा रे वाते करी री हैं।”

हमारे देश में शिक्षा अभी सब तक नहीं पहुँच सकी है, लेकिन व्हॉट्सऐप

सब तक पहुँच गया है। लोग व्हॉट्सऐप पर तैरते कच्चे-पक्के सन्देश को देख-पढ़कर सही मान लेते हैं। किसी ने कहा कि टीका लगने के बाद शरीर चुम्बक का बन जाता है। लोहे की कैंची, थाली, चम्मच आदि सब चिपकने लगते हैं। इस तरह के भ्रम गाँव से लेकर शहर तक फैले हुए हैं।

इधर, सरकारी अफसर लोगों के पास जाकर, उन्हें तसल्ली से समझाने की बजाय धमकियाँ दे आते हैं कि टीका लगवा लो, नहीं तो सरकार तुम्हारा राशन बन्द कर देगी, नरेगा में मज़दूरी नहीं मिलेगी, शौचालय और घर बनाने को सरकार की तरफ से मिलने वाला पैसा भी नहीं मिलेगा।

एक बार मैंने देखा कि गाँव के उपस्वास्थ्य केन्द्र से टीका लगवाकर लौट रहे लोग अपने हाथ में एक मुहर लगी पर्ची लेकर जा रहे थे।

मैंने पूछा, “यह क्या है?”

“आ पर्ची है, जो नरेगा मेट ए वताकणी है जदी ज कॉम देई,” एक महिला ने अपने लम्बे घूँघट के भीतर से कहा।

बताइए, क्या हाल है। हमारे सरकारी अधिकारियों और पंच-सरपंचों को यह समझना होगा कि जो लोग वैसे ही सरकार से डर रहे हैं, उन्हें और डरा-धमकाकर भला क्या फायदा होगा। सभी को टीका लगवाना ज़रूरी है, लेकिन इस तरह धमकी देकर और डराकर नहीं,

बल्कि प्यार और स्नेह से समझाते हुए, यह काम किया जाना चाहिए।

लोगों को जागरूक करने की ज़रूरत

एक लोकतांत्रिक देश में टीका लगवाना या नहीं लगवाना, एक व्यक्ति की स्वेच्छा पर निर्भर करता है। हमारा उद्देश्य तो होना चाहिए उन्हें सरल भाषा में इसके फायदे या नुकसान बताना। इतनी पंचायतों में घूमने पर मुझे तो दो-चार लोग ही ऐसे मिले जो टीका लगवाने को बिलकुल ही तैयार नहीं थे। बाकी ज़्यादातर लोगों को बस यही चिन्ता थी कि टीका लगने के बाद, दो-तीन दिन बुखार आएगा या कमज़ोरी रहेगी, तब उनकी मज़दूरी का क्या होगा। घर में बच्चों के लिए रोटी कौन बनाएगा। खेतों का काम कैसे हो सकेगा आदि। इस तरह की सामान्य चिन्ताओं को तो प्यार से बात करके, या उनकी मुश्किलों को कुछ कम करने में मदद करके भी दूर किया जा सकता है।

कुछ दिन पहले, हम लोग राजसमन्द ज़िले के भीम ब्लॉक में स्थित छापली पंचायत में टीकाकरण जागरूकता अभियान कर रहे थे। यहाँ की चार ढाणियों में चल रहीं नरेगा साइट पर हमारी टीम का जाना हुआ। नरेगा साइट पर काम कर रही महिलाओं को यह तो मालूम था कि कोरोना नाम की बीमारी फैली हुई है, हमें अपना मुँह ढाँककर रखना है,

लेकिन इससे बचने के लिए हमें टीका भी लगवाना है, यह बात किसी ने उनसे नहीं कही थी। हम लोगों ने बस इतना किया कि पास के स्वास्थ्य केन्द्र के पुरुष नर्स को अपने साथ ले आए। उन्होंने इस पंचायत में चल रही प्रत्येक नरेगा साइट पर जाकर तफसील से सभी महिलाओं के साथ बात की और उन्हें बताया कि इस महामारी की दूसरी लहर में बहुत-से लोगों की मौत हुई, लेकिन जिन लोगों को पहला टीका लग गया था, उनकी मौत कम हुई है।

यहाँ के सरपंच और मेट भी बहुत सहयोगी थे। उन्होंने सभी महिलाओं से कहा कि “यदि आप टीका लगवाने जाती हैं, तो उस दिन की दिहाड़ी की चिन्ता बिलकुल न करें। आप आराम-से टीका लगवाइए और वापस आकर पेड़ के नीचे बैठकर आराम कीजिए। यदि थोड़ा-सा बुखार भी आए तो घर रहकर आराम करिए। आप की दिहाड़ी कहीं नहीं जाएगी।” बस, इतने आश्वासन के बाद उस दिन बहुत-से लोगों ने जाकर टीका लगवाया था। शाम को प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र के डॉक्टरों से बात करके पता चला कि आज 40 से अधिक लोगों ने टीका लगवा लिया है। इनमें महिलाओं की संख्या ज़्यादा है। वे सीधे नरेगा साइट से चलकर आ रही हैं और टीका लगवाकर जा रही हैं।

इसी तरह देवगढ़ ब्लॉक की पालड़ी पंचायत में भी एक बस्ती में



कुछ परिवार टीका लगवाने को तैयार नहीं थे। पालड़ी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर स्वयं जागरूकता अभियान में शामिल हुए और घर-घर घूमकर लोगों को समझाया। हमारे साथ आई एनएम और एक शिक्षक साथी ने इनके साथ मेवाड़ी भाषा में बातचीत की। महिलाएँ एनएम बहनजी की उपस्थिति से सहज थीं। उनके पास जाकर अपने निजी सवाल कह पा रही थीं।

“बेनजी, कोई पेट ऊँ वे तो, वणि रे टीकों लागी सके क नी?”

“कण्डे बीपी वै, तो लगई सके क नी?”

“कनने ताव आवतों वे, तो वो लगई सके क नी?”

“कोई के के आदमी लगावे तो छोरों पैदा जोगो नी रेवे... आ वात हासी है कई?”

“टीकों लगावा ऊँ ताव तो नी आवे?”

किसी की बहू को बच्चा होना है, या किसी की बीपी की दवा चल रही है या कोई बुखार आने से घबरा रहा है आदि मुद्दों को लेकर उनके कई सवाल थे। हमारी टीम में शामिल एनएम और शिक्षक अजीत सिंहजी ने लोगों से बात करते वक्त अपने हाथ में तख्ती थाम रखी थी। उसमें कोरोना वायरस और एक बड़े-से इंजेक्शन का चित्र बना था। एनएम बहनजी अपनी बात कह ही रही थीं कि तभी एक बुजुर्ग ने कहा, “भई देकों, टीकों तो मूँ परो ल्गाऊँ, पण थारी तकती और टोपी माथे मंडी थकी हुई है, ज्या घणी मोटी हुई है।”

उनके इतना कहते ही ठहाके गूँज गए। इसी खुशनुमा माहौल में कई लोगों ने टीका लगवाने के लिए अपनी सहमती दी। एनएम ने दूसरे दिन ही टीकों का इन्तज़ाम कर दिया और कई लोगों ने टीके लगवाए। हमारे लिए नरेगा के ठिकाने महिलाओं के साथ संवाद स्थापित करने के

लिए एक स्वतंत्र मंच के रूप में उपयोगी रहे। एक साइट पर तकरीबन 50 महिलाएँ एक साथ मिल जाती थीं। यहाँ पर वे आज़ादी-से अपनी बात कह पाती थीं, जो शायद उनके घरों पर सम्भव नहीं था।

कोर कमेटी का गठन

अब तक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, राजसमन्द टीम के हमारे साथियों ने अलग-अलग गाँव और ढाणी में तकरीबन 15 से 20 हजार लोगों तक पहुँचकर कोरोना से बचाव और टीका लगवाने के महत्व पर बात की है। और तकरीबन 20 से अधिक चुनौतीपूर्ण पंचायतों के कुछ गाँव और ढाणी में यह कोविड टीकाकरण जागरूकता अभियान आयोजित किया जा चुका है। किसी एक पंचायत में स्थित सरकारी सीनियर सेकंडरी स्कूल, समीपवर्ती प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र या उप-स्वास्थ्य केन्द्र, वहाँ कार्यरत एएनएम, आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सरपंच, वार्ड पंच, गाँव के युवा और वरिष्ठ लोगों को साथ लेकर, हम लोग सबसे पहले एक कोर कमेटी बनाते हैं और उनके साथ मीटिंग करते हैं।

इस मीटिंग में पोस्टर, बैनर या फिर छोटी फिल्म दिखाकर कोरोना के खतरे और इससे बचाव के तरीकों पर बात की जाती है। साथ ही, स्वास्थ्य विभाग द्वारा दिए गए आँकड़े

सामने रख यह बताया जाता है कि पंचायत के कुल लक्षित समूह में से कितने लोगों को टीके लग चुके हैं, और कितने लोग अभी बाकी हैं। यहाँ पर मौजूद एएनएम, आंगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ता उन कारणों को सबके सामने रखती हैं जिनसे पंचायत में टीकाकरण की प्रक्रिया धीमी है। वे उन समुदायों या ढाणियों के बारे में भी बताती हैं, जहाँ टीकाकरण में चुनौती पेश हो रही हों। इसी मीटिंग में यह रूपरेखा भी बनाई जाती है कि किन क्षेत्रों में जागरूकता के लिए जन-सम्पर्क किया जाना चाहिए। आवश्यकता अनुसार तीन से चार टीमों का गठन किया जाता है। प्रत्येक टीम अपने साथ प्रचार-प्रसार की सामग्री भी लेकर जाती है।

किसी भी पंचायत में यह अभियान महज़ दो-तीन दिन की तैयारी में किया जाता है। कई बार जागरूकता अभियान के दिन ही सुबह 8 से 10 बजे तक कोर समूह की मीटिंग होती है। इसी दिन चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों का चुनाव किया जाता है और तीन से चार टोलियों में बँटकर लोग गाँव, ढाणी या नरेगा साइट की ओर निकल पड़ते हैं। पास के उपस्वास्थ्य केन्द्र पर मौजूद डॉक्टर और नर्स उसी दिन या अगले दिन, उपलब्धता के अनुसार, टीकों का इन्तज़ाम करके रखते हैं, ताकि जागरूकता अभियान से प्रेरित होकर आने वाले लोगों को टीका लगाया जा सके।

सहयोग से मिली सफलता

एक तरह से देखें तो यह पूरी मुहिम शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, महिला एवं बाल कल्याण विभाग, पंचायती राज से जुड़े जन प्रतिनिधियों और अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सदस्यों का साझा प्रयास होता है। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की मुख्य भूमिका इन सभी को एक उद्देश्य के लिए एक साथ लाने और सरल तरीके से आम लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के साधन जुटाने में ज़्यादा है।

एक स्कूल अपने आसपास के समाज का अभिन्न अंग होता है। समाज अपने स्कूल और शिक्षकों पर भरोसा करता है। ऐसे हज़ारों चम्पालाल हर गाँव और ढाणी में हैं, जो अपने शिक्षकों के एक इशारे पर साथ आ जुटने को तैयार हैं। पुष्पाजी जैसी एएनएम, नवली देवी जैसी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और अणछी बाई जैसी आशा कार्यकर्ता हैं, जो

बहुत लगन और मेहनत से काम कर रही हैं।

एक स्कूल को आसपास की प्रकृति, परिवेश और समाज से जोड़ने की बात हमेशा ही की जाती रही है। इस अभियान में हमने अपनी आँखों से देखा कि कैसे शिक्षक अपने समुदाय के लोगों के साथ मिलकर परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण कारक बन सकते हैं।

स्कूल को धुरी बनाकर ऐसे तमाम छोटे-छोटे प्रयास किए जा सकते हैं जिनमें स्थानीय समुदाय एवं स्थानीय शासकीय ढाँचों से कुछ लोग तो इस तरह के प्रयासों में जुड़ने के लिए तत्पर रहते हैं, और सक्रिय योगदान देते हैं। ज़रूरत है तो बस एकजुट होकर प्रयास करने की, लोगों के पास जाकर प्यार से बात करने की, उन्हें समझाने की।

परन्तु साथ ही, यह भी अत्यन्त चिन्ताजनक है कि हमने अपने समाज



में अलग-अलग किस्म की दुनिया बसा ली हैं। शहरों में रहने वाला एक तबका ऐसा है जो भाग-भागकर खुद को और अपने परिवार के लोगों को वैक्सीन लगवा रहा है। शहर में वैक्सीन उपलब्ध नहीं है तो 25-30 किलोमीटर दूर गाँव में जाकर वैक्सीन लगवाकर आ रहा है। और दूसरी तरफ हमारे गाँव हैं, बस्तियाँ हैं जहाँ लोग वैक्सीन लगवाने से कतरा रहे हैं।

हम लोगों तक सही शिक्षा पहुँचाने में असफल रहे हैं। जो लोग शिक्षित भी हुए हैं, उनमें वैज्ञानिक चेतना का अभाव है। उन्होंने स्कूल में पढ़ाए जाने वाले गणित-विज्ञान या इतिहास को सिर्फ पढ़ने के लिए पढ़ा है। इस शिक्षा से प्राप्त समझ और सीख को वे अपने जीवन में इस्तेमाल करने की काबिलियत ही नहीं विकसित कर सके हैं। इसीलिए वे बहुत जल्दी अफवाहों और झूठी खबरों पर यकीन कर लेते हैं। अपने समाज में बहुत गहरे तक बैठी अन्धविश्वास की जड़ों को उखाड़ फेंकने के लिए हमें अच्छी शिक्षा की आवश्यकता है जहाँ एक बच्चे की वैज्ञानिक चेतना को पोषित करने की अपार सम्भावनाएँ हों।

सच कहूँ, तो इस तरह के टीकाकरण जागरूकता अभियानों द्वारा हम बहुत-से लोगों को टीका लगवाने में मदद कर पा रहे हैं, यह मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। इस अभियान का हिस्सा बनकर दूर-दराज़ के गाँव में रहने वाले लोगों की शिक्षा और स्वास्थ्य सम्बन्धी चुनौतियों को थोड़ा और करीब से, अपनी आँखों से देखकर महसूस कर पाने का मौका मिला है। मुझे लगता है कि जन स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर हमारी सरकारों को और भी ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है। गाँवों में रहने वाले लोगों के लिए और ज़्यादा प्राथमिक अस्पताल खोलने और वहाँ पर डॉक्टर-नर्स, दवाइयाँ तथा चिकित्सा उपकरण मुहैया कराने की बहुत आवश्यकता है। मेरे मन में आम लोगों के लिए उपलब्ध बुनियादी चिकित्सा सुविधाओं को लेकर केन्द्र और राज्य सरकारों से कई सवाल भी हैं। उनकी बात कभी और करेंगे। फिलहाल, मुझे विनय और चारुल के गीत की ये पंक्तियाँ बहुत याद आ रही हैं।

*मेरी बूढ़ी माँ को जानने का हक है,
क्यों गोली, सुई, नहीं दवाखाने
पट्टी-टाँके का सामान नहीं।*

मोहम्मद उमर: अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, राजसमन्द, राजस्थान में कार्यरत हैं। गणित अध्ययन एवं शिक्षण में विशेष रुचि।

यह टीकाकरण अभियान जुलाई, 2021 में किया गया था।

सभी फोटो: मोहम्मद उमर।